व्यष्टि अर्थशास्त्र

Micro Economics

उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धान्त

Theory of consumer's Behaviour

चित्रा पाण्डेय
प्रवक्ता
(अर्थशास्त्र)
रा० बा० इ० का०
डीडीहाट
पिथौरागढ़

व्यष्टि अर्थशास्त्र
Micro Economics

पाठ - 2 उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धान्त
Lesson - 2 Theory of Consumer's Behaviour

उपभोक्ता - अर्थशास्त्र में उपभोक्ता उसे कहते हैं जो उपभोग की क्रिया द्वारा अपनी आवश्यकता विशेष की संतुष्टि करता है।

उपभोक्ता व्यवहार (Consumer's Behaviour) - वह प्रक्रिया जिसमें उपभोक्ता यह चुनाव करता है कि वह अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं पर कैसे व्यय करे कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो।

उपयोगिता (Utility) - आवश्यकता को संतुष्ट करने की शक्ति को उपयोगिता कहते हैं। किसी वस्तु की उपयोगिता प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान नहीं होती।

उदासीनता वक्र (Indifference Curve) - यह दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोगों का बिन्दुपथ होता है जो उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि देते हैं।

माँग का नियम (Law of Demand) - माँग का नियम वस्तु की कीमत और इसकी माँगी गयी मात्रा के बीच विपरीत सम्बन्ध को प्रकट करता है। अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने से इसकी माँग में कमी आती है और और मूल्य में कमी होने से इसकी माँग में वृद्धि होती है।

उपयोगिता का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएँ
Meaning, Definition and Characteristics of Utility

उपयोगिता किसी वस्तु की वह क्षमता है जिससे किसी मानवीय आवश्यकता की संतुष्टि होती है अर्थात आवश्यकता पूर्ति की शक्ति (Want satisfying power) ही उपयोगिता है।

प्रो० मार्शल के अनुसार, "किसी समय किसी मनुष्य के लिए किसी वस्तु की उपयोगिता को उस सीमा से नापा जाता है, जिस सीमा तक वह किसी आवश्यकता की संतुष्टि करती है।"

उपयोगिता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. उपयोगिता एक अमूर्त धारणा है।
2. किसी वस्तु की उपयोगिता प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान नहीं होती।
3. उपयोगिता शब्द सापेक्षिक है।
4. उपयोगिता लाभदायक एवं हानिकारक दोनों वस्तुओं से प्राप्त होती है। मादक पदार्थ हानिकारक होते हैं परन्तु नशेड़ी व्यक्तियों के लिए उनमें उपयोगिता होती है।
5. उपयोगिता का नैतिकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता।
6. उपयोगिता इच्छा की तीव्रता का फलन है। जैसे- ⇒ उपभोक्ता किसी वस्तु विशेष की अतिरिक्त इकाइयों का उपभोग करता है उसकी इच्छा की तीव्रता में कमी होती जाती है। यही घटती उपयोगिता का विचार है।

सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता
Marginal Utility and Total Utility

वस्तु की अन्तिम इकाई के प्रयोग से प्राप्त उपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता एवं प्रयुक्त सभी इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता के योग को कुल उपयोगिता कहते हैं।

प्रो० बोल्डिंग के अनुसार, "वस्तु की किसी मात्रा की सीमान्त उपयोगिता कुल उपयोगिता में वह वृद्धि है जो उपभोग की एक इकाई के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है।"

प्रो० मेयर्स के अनुसार, "किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों के उपभोग के परिणामस्वरूप प्राप्त उपयोगिता को कुल उपयोगिता कहते हैं।"

सीमान्त उपयोगिता का उदाहरण (Example of Marginal Utility)

उत्तरोत्तर इकाइयों की सीमान्त उपयोगिता घटती हुई होती है। यदि वस्तु की प्रत्येक इकाई एक समान हो तो उपभोक्ता उस वस्तु का प्रयोग पूर्ण तृप्ति के बिन्दु (point of perfect saturation) तक करेगा जहाँ सीमान्त उपयोगिता शून्य हो जाती है। इसके बाद भी वस्तु का उपभोग करने पर ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता मिलेगी।

X वस्तु की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता	
1	40	घटती किन्तु धनात्मक उपयोगिता
2	30	
3	20	
4	10	
5	0	तृप्ति बिन्दु या शून्य सीमान्त उपयोगिता
6	-10	घटती एवं ऋणात्मक उपयोगिता
7	-20	

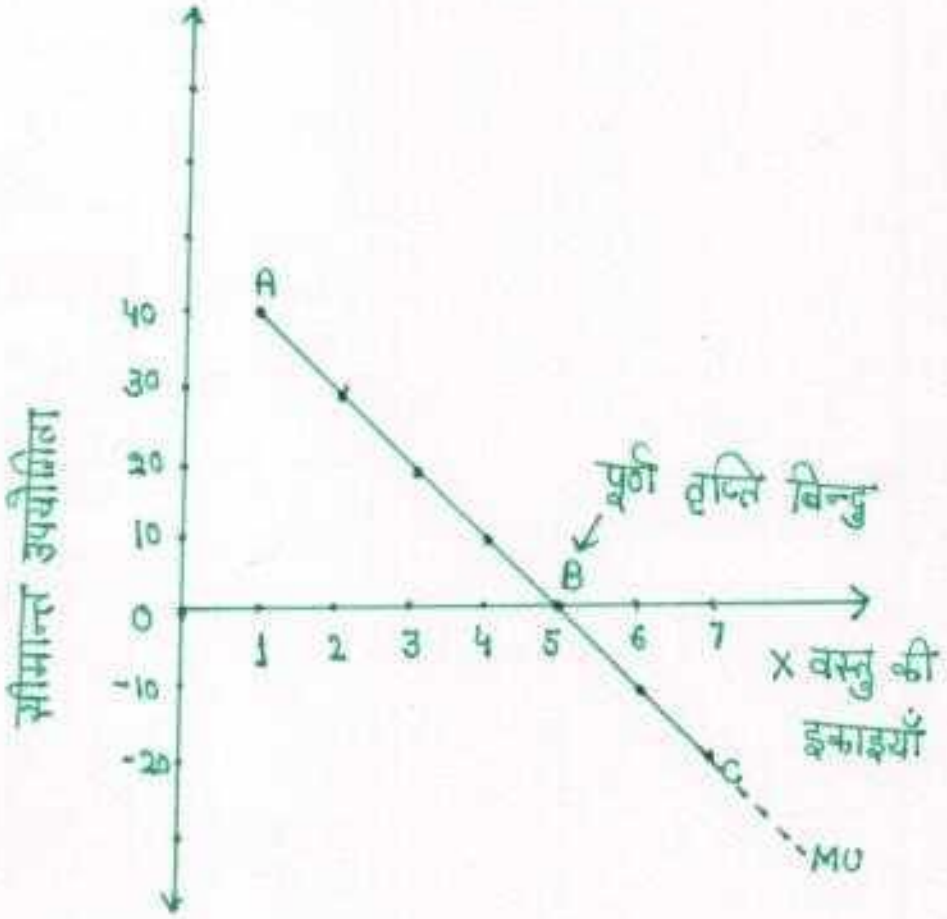

चित्र द्वारा स्पष्टीकरण

ह्रासमान या घटती सीमान्त उपयोगिता नियम
Law of Diminishing Marginal Utility

घटती सीमान्त उपयोगिता के नियम के अनुसार जब किसी वस्तु की इकाइयों का लगातार अधिक से अधिक उपभोग किया जाता है, तब प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है। इसे संतुष्टि का आधारभूत एवं सार्वभौमिक नियम (Fundamental and Universal Law of Satisfaction) कहा जाता है। सीमान्त उपयोगिता के नियम के अनुसार जैसे-2 एक व्यक्ति के पास किसी वस्तु का स्टॉक बढ़ता जाता है एक सीमा के पश्चात उस वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों से मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है।

मान्यताएँ (Assumptions)

1. वस्तु का उपभोग निरन्तर क्रम में होना चाहिए।
2. उपभोग की इकाइयाँ उपयुक्त आकार की होनी चाहिए।
3. वस्तु की इकाइयाँ समरूप होनी चाहिए।
4. स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतें स्थिर होनी चाहिए।
5. उपभोक्ता की आय एवं उपभोग प्रवृत्ति स्थिर होनी चाहिए।
6. उपभोक्ता की मानसिक स्थिति में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

कुल उपयोगिता (Total Utility)

उपभोग की सभी इकाइयों के उपभोग से उपभोक्ता को जो उपयोगिता प्राप्त होती है, उसे कुल उपयोगिता कहते हैं।

$$TU = \Sigma MU$$

अर्थात कुल उपयोगिता (TU) सीमान्त उपयोगिताओं (MU) का योग होती है।

उदाहरण (Example)

वस्तु X की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता	कुल उपयोगिता
1	40	40
2	30	40+30 = 70
3	20	70+20 = 90
4	10	90+10 = 100
5	0	100 + 0 = 100
6	-10	100 - 10 = 90
7	-20	90 - 20 = 70

सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता में सम्बन्ध
Relationship between Marginal and Total Utility

1. जब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक है तब तक कुल उपयोगिता बढ़ती है। (बिन्दु A से E)

2. जब सीमान्त उपयोगिता शून्य हो कुल उपयोगिता अधिकतम होती है। (बिन्दु E)

3. जब सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक होती है तब कुल उपयोगिता घटने लगती है। (बिन्दु E से G)

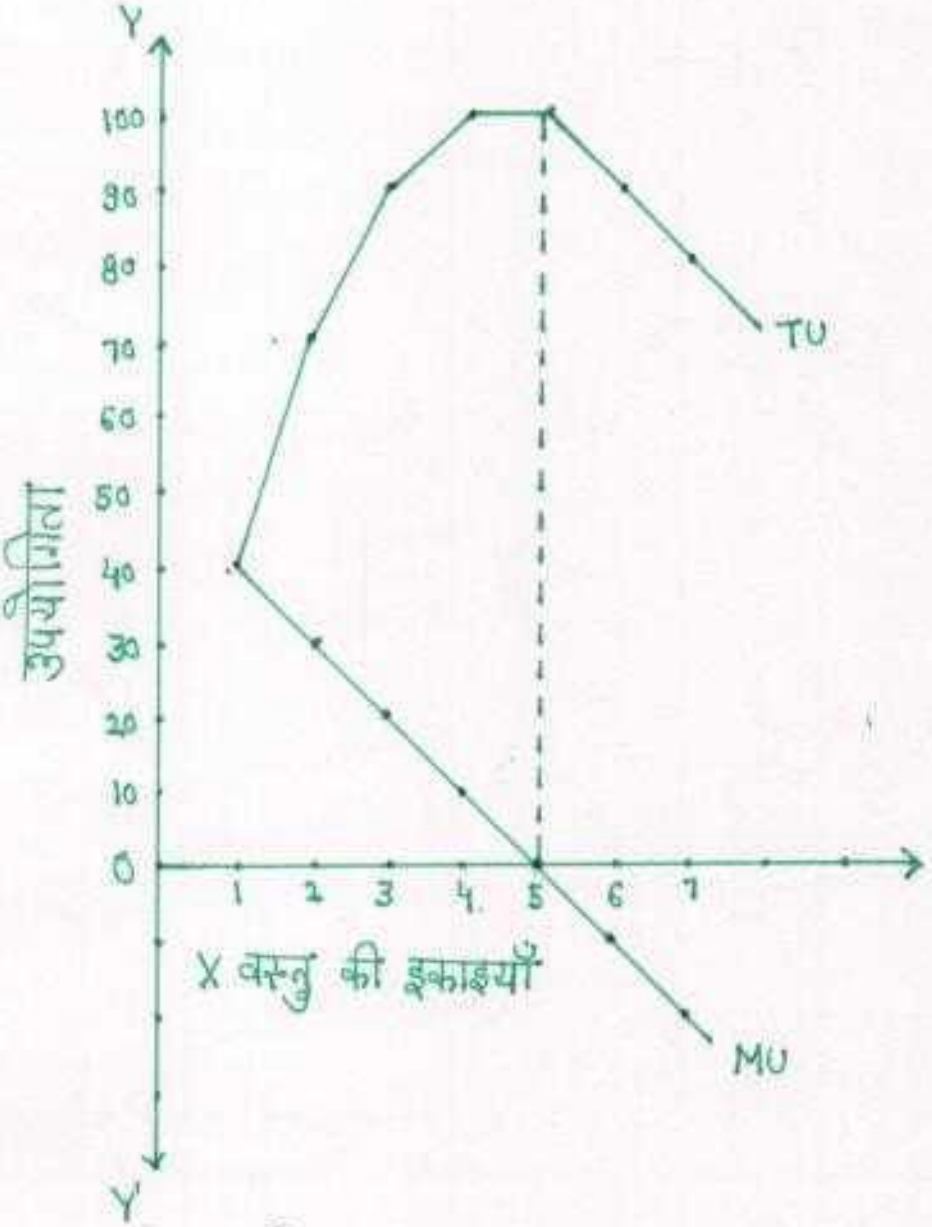

चित्र द्वारा स्पष्टीकरण

उदासीनता वक्र (Indifference Curve)

उदासीनता वक्र उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करने वाले दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को व्यक्त करता है।

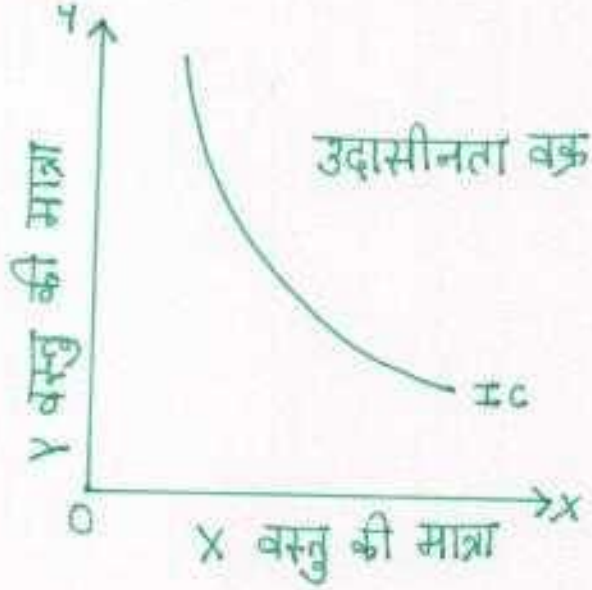

एक उदासीनता वक्र सन्तुष्टि के एक स्तर को बताता है, भिन्न - 2 सन्तुष्टि के स्तरों को बताने वाले विभिन्न उदासीनता वक्रों का समूह उदासीनता मानचित्र कहलाता है।

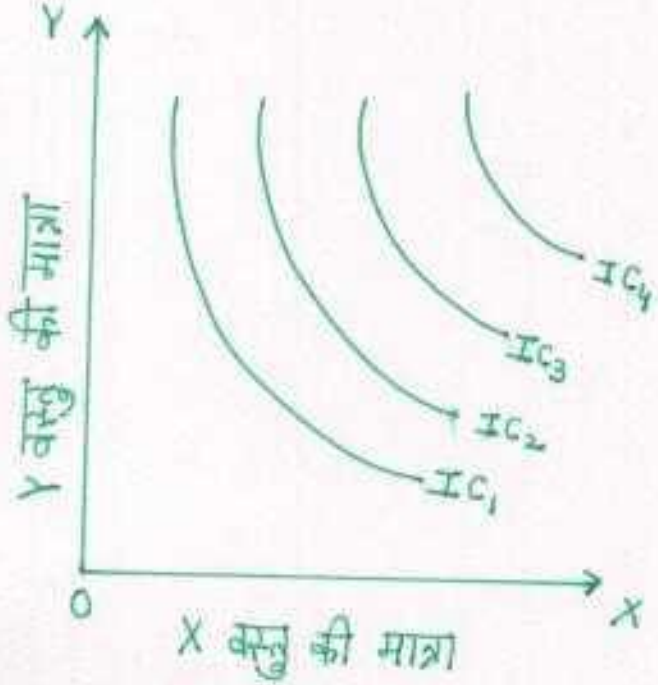

उदासीनता वक्रों की विशेषताएँ
Characteristics of Indifference Curve

1. उदासीनता वक्र बाँये से दाँये नीचे गिरता होता है।
2. ऊँचा उदासीनता वक्र सन्तुष्टि के ऊँचे स्तर को दिखाता है।
3. दो उदासीनता वक्र कभी एक दूसरे को नहीं काटते।
4. उदासीनता वक्र कभी भी किसी अक्ष को स्पर्श नहीं करते।
5. उदासीनता वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होता है।
6. पूर्ण स्थानापन्न वस्तुओं में उदासीनता वक्र समानान्तर होते हैं।
7. उदासीनता वक्र गोलाकार भी हो सकते हैं।

ह्रासमान सीमान्त प्रतिस्थापन दर
Diminishing Marginal Rate of Substitution

MRS_{xy} Y की वह मात्रा है जिसे उपभोक्ता X की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए त्यागने को तैयार होता है। MRS_{xy} घटती हुई होती है क्योंकि उपभोक्ता वस्तु X की प्रत्येक इकाई वृद्धि के लिए Y की अपेक्षाकृत कम इकाइयाँ त्यागने को तैयार होता है।

$$MRS_{xy} = \frac{\Delta Y}{\Delta X}$$

माँग का नियम : अर्थ व परिभाषा
Law of Demand : Meaning and Definition

माँग का नियम बताता है कि किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने से उसकी माँग कम हो जाती है और कीमत में कमी होने से माँग बढ़ जाती है।

मेयर्स के अनुसार, "माँग की समान परिस्थितियों के अन्तर्गत किसी वस्तु की खरीदी जाने वाली मात्रा में कीमत के विपरीत दिशा में परिवर्तित होने की प्रवृत्ति होती है।"

उदाहरण (Example)

X वस्तु की कीमत (रू०)	वस्तु की माँग (इकाइयाँ)
1	60
2	50
3	40
4	30
5	20
6	10

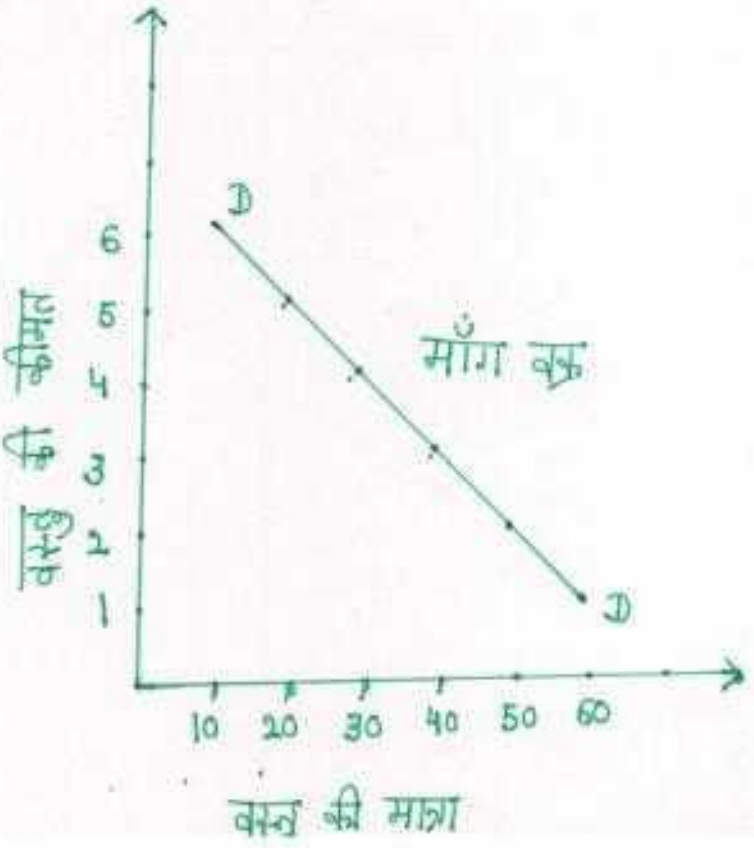

माँग में विस्तार एवं संकुचन
Extension and Contraction in Demand

जब माँग में परिवर्तन केवल कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप होता है तब ये परिवर्तन एक ही माँग वक्र पर घटित होते है। इस प्रकार के परिवर्तन माँग का विस्तार एवं मांग का संकुचन प्रकट करते हैं।

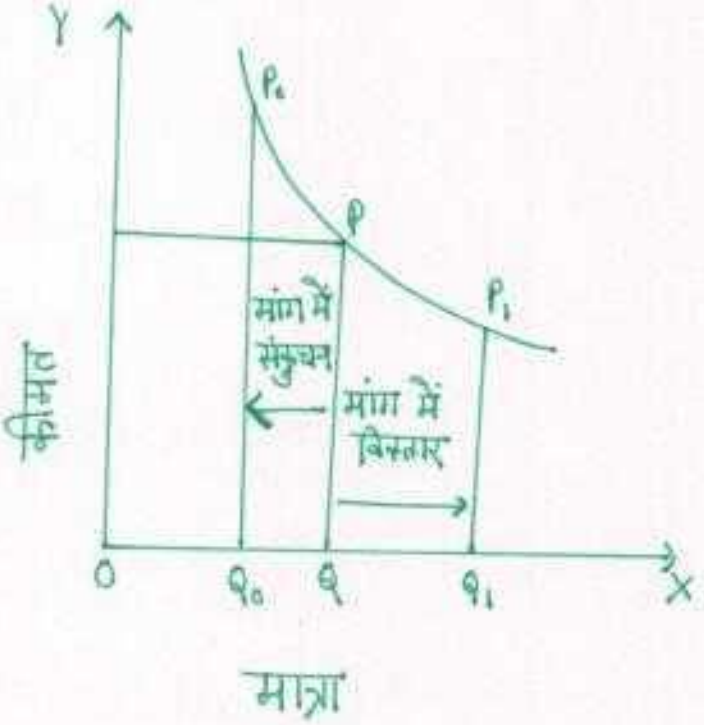

माँग में वृद्धि एवं माँग में कमी
Increase in Demand and Decrease in Demand

जब किसी वस्तु की माँग में उसकी कीमत के अलावा अन्य तत्वों जैसे आय फैशन आदि में परिवर्तन होने से परिवर्तन होता है तो माँग में कमी या वृद्धि की स्थिति उत्पन्न होती है।

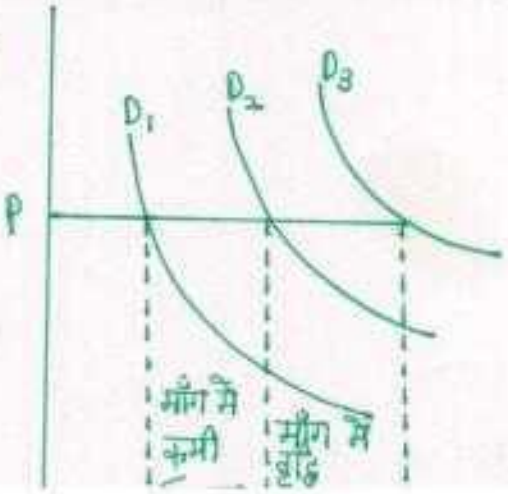

माँग की कीमत लोच
Price Elasticity of Demand

माँग का नियम एक गुणात्मक कथन है जबकि माँग की लोच एक परिमाणात्मक कथन है। माँग की कीमत लोच कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में होने वाले परिवर्तन को बताती है।

मार्शल के अनुसार, "माँग की लोच का बाजार में कम या अधिक होना इस बात पर निर्भर करता है कि वस्तु की कीमत में एक निश्चित मात्रा में परिवर्तन होने पर उसकी माँग में सापेक्ष रूप से अधिक या कम अनुपात में परिवर्तन होता है।

माँग की लोच की श्रेणियाँ
Degrees of Elasticity of Demand

1. पूर्णतया लोचदार माँग:- जब वस्तु की कीमत में कोई परिवर्तन न होने पर भी वस्तु की माँग में परिवर्तन हो जाता है, तब इसे पूर्णतया लोचदार माँग कहते हैं।

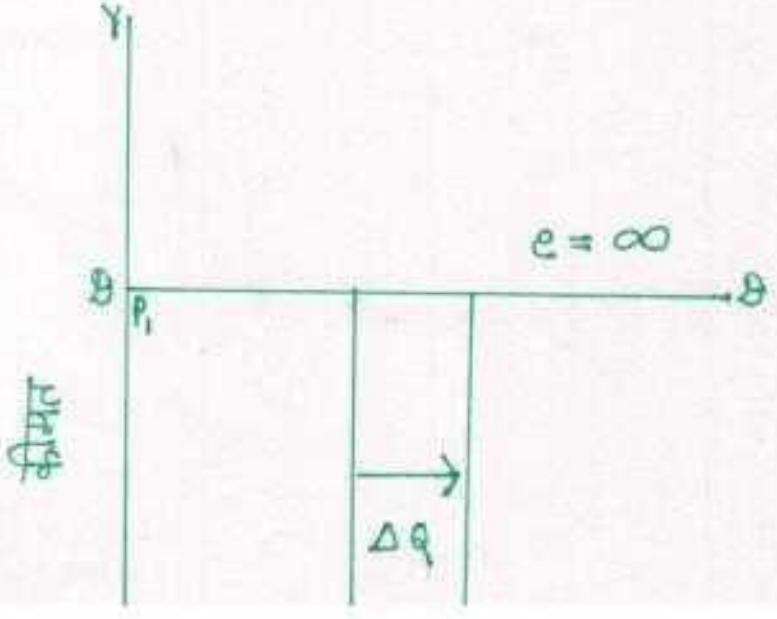

2. अत्यधिक लोचदार माँग :- जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में अधिक आनुपातिक परिवर्तन होता है तो ऐसी वस्तु की माँग को अत्यधिक लोचदार माँग कहते हैं।

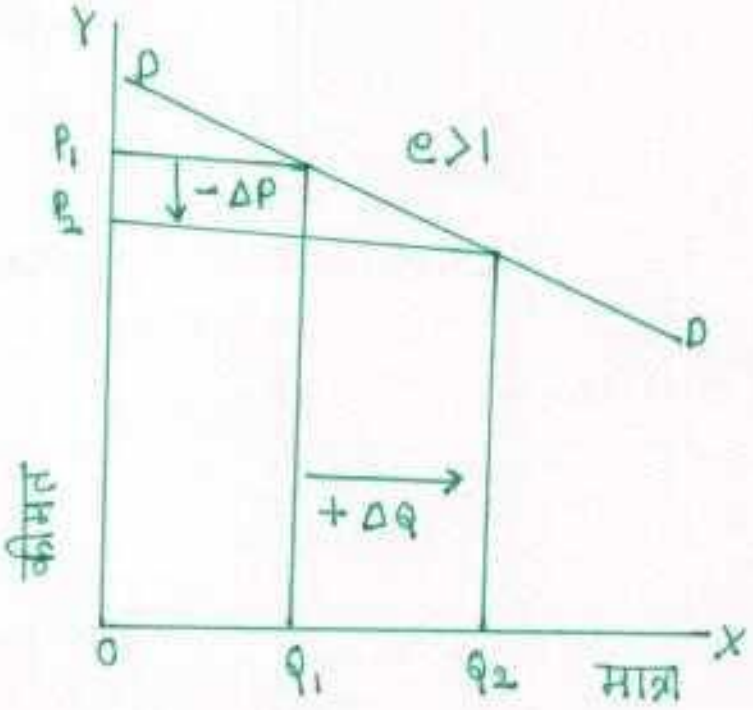

3. इकाई लोचदार माँग :- जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी माँग में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है तो उसकी माँग इकाई लोचदार माँग कहलाती है।

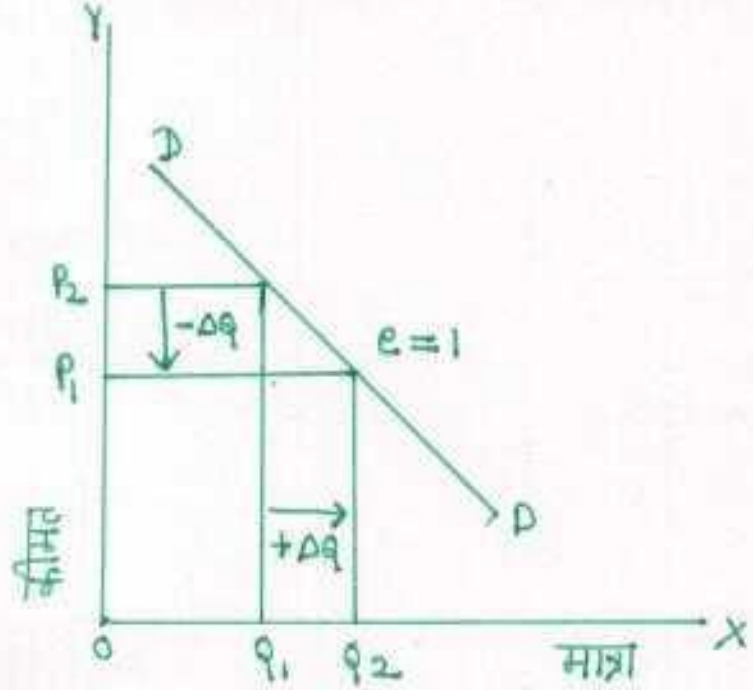

4 अत्यधिक बेलोचदार माँग :- जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कम आनुपातिक परिवर्तन होता है, तब ऐसी वस्तु की माँग अत्यधिक बेलोचदार माँग कहलाती है।

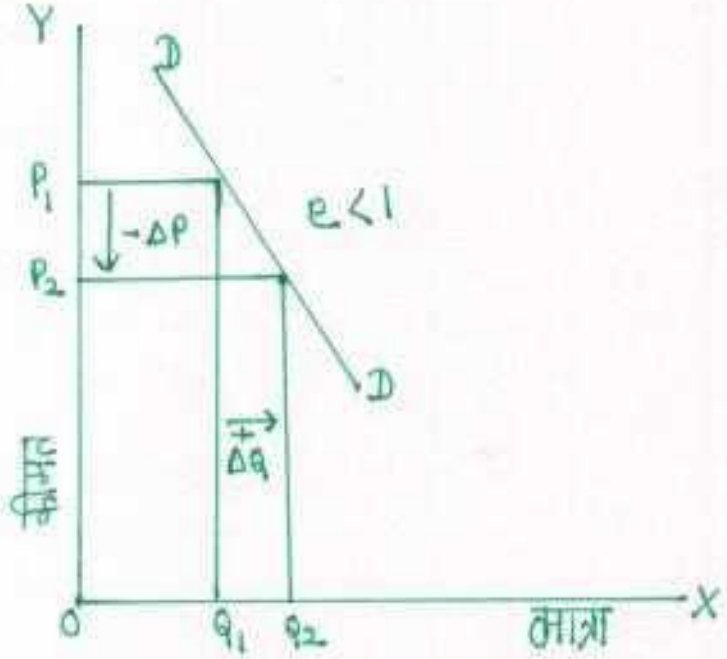

5. पूर्ण बेलोचदार माँग :- जब किसी वस्तु की कीमत के परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग में कोई परिवर्तन नहीं होता तो इसे पूर्णतः बेलोच माँग कहते हैं।

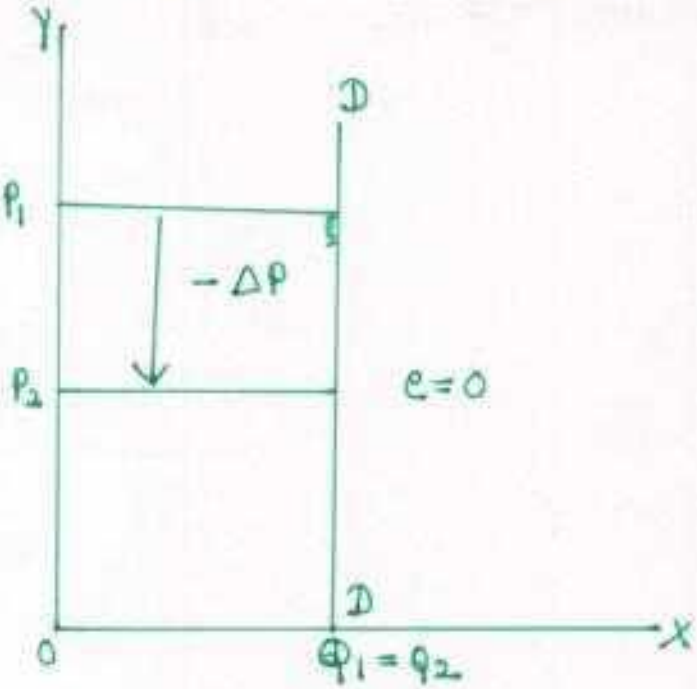

मॉग की लोच मापने की रीतियाँ
Methods of Measuring Elasticity of Demand

1. **फ्लक्स की प्रतिशत रीति:-** इस रीति के अन्तर्गत मॉग में प्रतिशत परिवर्तन की तुलना कीमत में हुए प्रतिशत परिवर्तन ~~की तुलना कीमत~~ से की जाती है।

सूत्रानुसार

$$\text{मॉग की मूल्य सापेक्षता } (e_D) = \frac{\text{मॉग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$= \frac{\dfrac{\text{मॉग में परिवर्तन}}{\text{मॉग मे परिवर्तन से पूर्व मात्रा}}}{\dfrac{\text{कीमत मे परिवर्तन}}{\text{परिवर्तन से पूर्व कीमत}}}$$

$$= \frac{\Delta Q / Q}{\Delta P / P} = \frac{\Delta Q}{Q} \div \frac{\Delta P}{P}$$

$$= \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

2. **मार्शल की कुल व्यय रीति:-** इस विधि के अन्तर्गत मूल्य परिवर्तन से पहले और मूल्य परिवर्तन के बाद में कुल व्यय के परिवर्तनों की तुलना करके सम्बन्धित वस्तु की मूल्य सापेक्षता का अनुमान लगाया जाता है।

कुल व्यय = कीमत × माँग की मात्रा

इस विधि द्वारा वस्तु की माँग की मूल्य सापेक्षता तीन प्रकार से व्यक्त की जा सकती है।

1. माँग की मूल्य सापेक्षता इकाई से अधिक ($e_d > 1$)
2. माँग की मूल्य सापेक्षता इकाई के बराबर ($e_d = 1$)
3. माँग की मूल्य सापेक्षता इकाई से कम ($e_d < 1$)

3. ज्यामितीय या बिन्दु रीति:- इस रीति में माँग वक्र के किसी बिन्दु पर माँग की लोच ज्ञात करने के लिए उस बिन्दु पर एक स्पर्श रेखा खींची जाती है।

$$e_d = \frac{\text{निचला भाग}}{\text{ऊपर का भाग}}$$

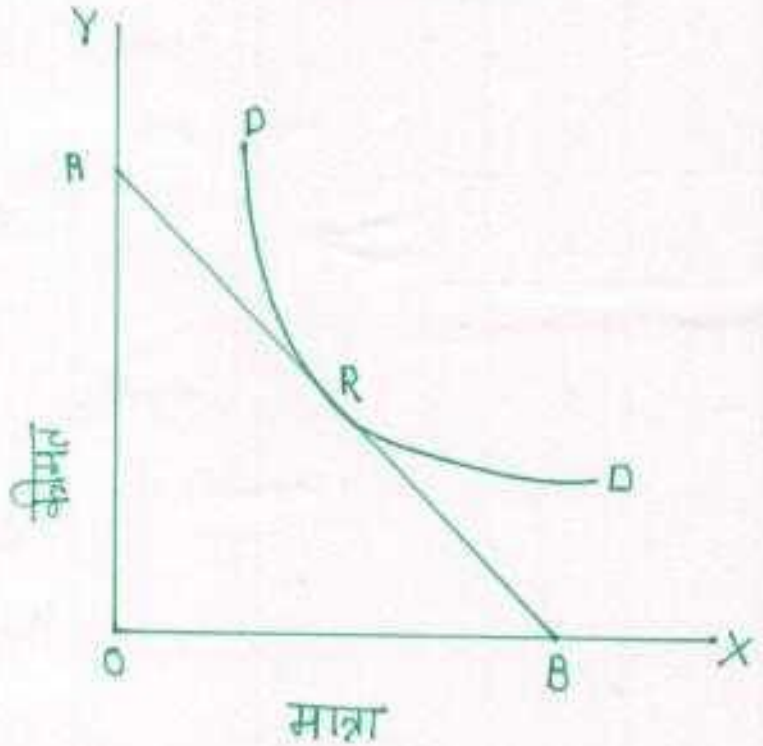

$$e = \frac{\text{निचला भाग}}{\text{ऊपर का भाग}} = \frac{RB}{RA}$$